अज्ञेय के काव्य में भावगत एवं शिल्पगत प्रयोग

(हिंदी प्रतिष्ठा, बी.ए. द्वितीय वर्ष, चतुर्थ पत्र)

(डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर)

कवि अज्ञेय बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। कवि होने के साथ-साथ वे निबंधकार, उपन्यासकार, आलोचक, पत्रकार इत्यादि थे। अज्ञेय प्रयोगवाद और नई कविता के प्रतिनिधि कवि रहे। इन्होंने काव्य में भाव-पक्ष एवं शिल्प पक्ष दोनों स्तरों पर प्रयोग को प्रमुखता दी। साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन करते रहे, इनकी सभी विधाएँ श्रेष्ठ लेखन का उदाहरण हैं, पर जब बात कविता की आती है तो अज्ञेय के प्रयोग के अनंत उदाहरण प्राप्त होते हैं। इन्होंने चार सप्तकों का संपादन किया। ये चारों सप्तक हिंदी कविता को एक विशिष्ट ऊंचाई पर पहुँचाने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए। आधुनिक कविता भारतेंदु युग से ही निरंतर यात्रा करती आ रही थी। निरंतर उसके भाव और शिल्प में परिवर्तन और विकास हो रहा था। परंतु अज्ञेय ने अपने प्रयोगों से हिंदी कविता को एक नई पहचान दी। परिवेश के प्रति जागरूकता और सम्वेदनशीलता एक कवि को समाज के समक्ष अधिकाधिक विश्वसनीयता प्रदान करता है। अपने इन गुणों के कारण ही अज्ञेय हिंदी साहित्य ही नहीं अपितु विश्वसाहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। जीवन के हर छोटे से छोटे क्षण की अनुभूति को उसकी संपूर्णता में अनुभव करना और उस अनुभूति को संपूर्णता से अभिव्यक्त करना, आवश्यकता के अनुरूप नई भाषा को गढ़ना अज्ञेय की अपनी विशेषता है।

इन्होंने विषय को लेकर जितने प्रयोग किये हैं उतने ही भाषा को लेकर भी। कारण यह रहा कि नया भाव पुरानी भाषा से प्रकट हो ही नहीं सकता है। क्षण की अनुभूति को कवि पूरी तरह से महसूस कर लेना चाहते हैं। हर क्षण खास है, उसकी अनुभूति खास है, कवि प्रत्येक क्षण की अनुभूति को जी लेना चाहते हैं। उसकी अद्वितीयता और संपूर्णता को जितना और जिस रूप में अनुभव करते हैं, बिल्कुल उतने ही और उसी रूप में उसे अभिव्यक्त भी कर देना चाहते हैं-

“आ के इस विविक्त अद्वितीय क्षण को

पूरा हम जी लें, पी लें, आत्मसात कर लें

इसकी विविक्त अद्वितीयता आपको, कवि को, क, ख, ग को

अपनी-सी पहचनवा सके

एक क्षण-क्षण में प्रवाहमान,

व्याप्त संपूर्णता।”

एक-एक क्षण की अनुभूति के साथ-साथ कवि ने आत्मान्वेषण पर बल दिया है। अपने को तलाशने की जो प्रक्रिया भक्तिकाल के भक्त कवियों में शुरू हुई थी, वह अज्ञेय के काव्य तक आते-आते परिपक्व रूप ग्रहण करती है और कवि अज्ञेय के प्रयोगधर्मी स्वभाव को और अधिक स्पष्ट करती है। आत्मान्वेषण की प्रवृत्ति उनके काव्य में अत्यंत गहरी है। ‘आँगन के पार द्वार’ में यह अन्वेषण अत्यंत सजीव रूप में उपस्थित है। कवि के आत्मान्वेषण की यह

प्रवृत्ति उसके प्रयोगधर्मी भाव और शिल्प को और अधिक परिष्कृत करती है। उनका आत्मान्वेषण आत्मबोध और आत्मविश्लेषण से जुड़ा हुआ है।'नदी के द्वीप' कविता आत्मान्वेषण की ही अभिव्यक्ति है।–

"हम नदी के पुत्र हैं।

बैठे हैं नदी की क्रोड़ में।

वह वृहद भूखंड से हमको मिलाती है।

और वह भूखंड, अपना पितर है।

अज्ञेय भाषा के स्तर पर भी प्रयोग को जरूरी मानते हैं। काव्य में भाव की आवश्यकता के अनुसार ये भाषा और शिल्प को गढ़ लेते हैं।

"चांदनी सित रात की चितकबरी

उसे भूखंड की गंजी सतह पर

खोह के खंडहर,

कपालों में धँसा ज्यों एक महसूस अंधियारा।।"

प्रतीक में भी नवीनता के प्रति आग्रह है। दीपक को उन्होंने मानव का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया है। बिम्बों के इतने नवीन प्रयोग अज्ञेय ने किए हैं कि कविता का स्वरूप ही नवीन हो गया है। दृश्य बिम्ब, घ्राण बिम्ब, स्पर्श बिम्ब इत्यादि बिम्बों के अनूठे प्रयोग अज्ञेय ने किए हैं दृश्य बिम्ब का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"पति-सेवारत साँझ

उचकता देख पराया चाँद

लजाकर ओट हो गई।"

प्रतीकों-बिम्बों के अतिरिक शब्द-शक्ति, मुहावरे, लोकोक्ति, छंद इत्यादि को लेकर भी अज्ञेय ने अनेक प्रयोग किए हैं।